ISSUE-08 / Vol.-27 / June-Sep.-2020 ISSN NO. 2319-5908

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Quarterly Journal

SHODH SANDARSH

शोध संदर्श

Education, Literature, History, Art, Culture, Science, Commerce etc.

Patron

Prof. (Dr.) A.P. Ojha
Head.
Deptt. of AIHC & Archaeology
Allahabad Central University, Allahabad

Prof. R.P. Tripathi
Ex. Head.
Deptt. of AIHC Archaeology
Allahabad Central University, Allahabad

Chief Editor

Dr. Vimlesh Kumar Pandey
Associate Professor
P.G. Deptt. of AIHC & Archaeology
S.B.P.G. College, Badlapur, Jaunpur

Editors

Prof. Sushaim Bedi
Deptt. of Hindi
Colambia University USA

Dr. Vijay Pratap Tiwari
Mentor of SSIJ and Educationist,
Delhi, India

Dr. Vijay Kumar Mishra
Founder VP Print Media and Research Institute, Prayagraj, India

Dr. Pramod Kumar Pandey
Prof. & Head of Maithili
T.M. Bhagalpur University, Bhagalpur Bihar

Co-editor

Nar Narayan "Shastri"

Editorial Managerable Office

Vijay Pratap Tiwari

539-A, Bukhshi Khurd, Daraganj, Prayagraj-211006
Email : shodhsandarshalld@gmail.com
Website : www.shodhsandarsh.com
Mobile : 09415627149, 09450586526, 09015465436

Publisher & Printer

Vagisha Prakashan, Old Jhunsi, Kohna, Jhunsi, Prayagraj
Email : Vijaykumarmishra1976@gmail.com

- बिहारी की मानव-जीवन सम्बन्धी गहन अनुभूति–*डॉ. सायरा बानो* 133-135
- **India Towards Rejuvenation : Positive Journalism & Covid-19**–*Vishakha* 136-142
- **The Contextual Exploration of Toni Morrison's "Recitatif" : A Socio-Historical Approach**–*N.R. Gopal* 143-146
- अग्निपुराण में निरूपित प्राणी चिकित्सा-औषध एवं मंत्रों के द्वारा–*कृष्ण कुमार यादव* 147-151
- माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता–*डॉ. समर बहादुर सिंह* 152-155
- कांकेर जिले में जनजातीय महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि–*सुरेश कुमार एवं डॉ. एल.आर. सिन्हा* 156-161
- माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के रुचियों एवं व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन –*जनार्दन यादव एवं डॉ. नीता तिवारी* 162-164
- महिला समाख्या संगठन द्वारा महिला शिक्षा की दिशा में किए गए योगदान का अध्ययन –*विकास सिंह एवं डॉ. श्रद्धा सिंह* 165-168
- **Relation Between Spirituality and Well Being Among Adolescents** –*Smriti Srivastava & Dr. janhvi Srivastava* 169-177
- पूर्व मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था : ऐतिहासिक अध्ययन–*डॉ. प्रवीन कुमार मिश्र* 178-181
- **Wordsworth's Tintern Abbey : An Ecocritical Reading** –*Dr. Shiv Narayan Yadav* 182-187
- समकालीन हिन्दी उपन्यास में आदिवासी अस्मिता का प्रश्न–*नीलू सिंह* 188-191
- महिला सशक्तिकरण : राजनीतिक सहभागिता के संदर्भ में–*मनोज कुमार वर्मा* 192-197
- सुभाष पंतजी का उपन्यास 'पहाड़ चोर' में औद्योगिक परिदृश्य–*डॉ. रश्मि मालगी* 198-201
- **A Conceptual Framework of Chinese Diaspora**–*Sunil Kumar Dwivedi* 202-205
- ममता कालिया के कहानियों पर एक दृष्टि–*मनोरमा सिंह* 206-207
- रस, भाव एवं ठुमरी–*प्रगति मिश्रा* 208-211
- आधुनिक परिवेश में रामचरित मानस की सांस्कृतिक प्रासंगिकता–*डॉ. आभा सिंह* 212-214
- छत्तीसगढ़ में कृषि विकास : ग्रामीण बैंकों की भूमिका–*रवि शंकर गुप्ता* 215-216
- हिन्दी कथा साहित्य और स्त्री जीवन–*डॉ. पदमा राम परिहार* 217-220
- विकासखण्ड सोंधी जनपद जौनपुर में साक्षरता की क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप का भौगोलिक अध्ययन–*प्रशान्त यादव एवं डॉ. अनामिका सिंह* 221-226
- **Impact of Cement Industry Pollution on Physio-Morphology Attributes of Kadam (*Anthocephaluscadamba*) around K.J.S. Cement** –*Sandeep Pratap Singh & Manoj Kumar Singh* 227-230
- अंग प्रदेश की लोकगाथा बिहुला विषहरी : संदेश एवं चरित्र–*डॉ. कुमार चैतन्य प्रकाश* 231-233
- इतिहास में कौरवी प्रदेश–*डॉ. कविता त्यागी* 234-237
- उच्चतर माध्यम स्तर पर अध्ययनरत कला व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन–*मुहम्मद आसिफ अन्सारी एवं डॉ. राजेन्द्र कुमार जायसवाल* 238-243
- आचार्य बल्लभ का ब्रह्म, जगत एवं जीव विचार–*डॉ. दल सिंगार सिंह* 244-258
- सन्त विनोबा भावे की राजनीतिक दृष्टि–*डॉ. विमलेश कुमार पाण्डेय* 259-265
- जनजातियाँ, कहानी और मानवाधिकार–*मनोज कुमार राघव* 266-269
- वैदिक साहित्य में नारी का स्थान एवं शिक्षा-दिक्षा–*डॉ. रंजना तिवारी* 270-272
- अमरकान्त के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक समस्याएँ (एक विशेष संदर्भ में) –*किरन चौरसिया* 273-276

******

(U.G.C. Approved Peer Reviewed Refereed Journal) ISSN No. - 2319–5908

History : Shodh Sandarsh-VIII, Vol.-XXVII, June-Sept. 2020, Page : 178-181

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

पूर्व मध्यकालीन भारत में महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था : ऐतिहासिक अध्ययन

*डॉ. प्रवीन कुमार मिश्र**

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को समझने के अतिरिक्त देश की उपलब्धि तथा श्रेष्ठता का मूल्यांकन करने के लिए भी समाज का अवलोकन करना अतिआवश्यक होता है। समाज में जितना महत्व पुरुषों को दिया जाता है, उतना ही महत्व स्त्रियों को भी दिया जाना चाहिए। प्राचीन काल से ही नारी की स्थिति में उतार–चढ़ाव देखने को मिलता है। अतः वर्तमान में नारी दशा पर समय–समय पर शोध कार्य किए जा रहे हैं। जहां एक और ऋग्वैदिक काल में नारियों की स्थिति श्रेष्ठ थी और उनकी शिक्षा–दीक्षा पर बल दिया जाता था वहीं उत्तर वैदिक काल में इनकी स्थिति में गिरावट देखने को मिलती है। इसका प्रमुख कारण नारियों को प्राप्त होने वाले शिक्षा के अधिकार से वंचित करना था। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था वहां की सांस्कृतिक परंपरा एवं जन जीवन की जागरूकता पर निर्भर करती है पूर्व मध्यकाल तक स्त्रियों को शूद्रों की भांति वेदों के अध्ययन और यज्ञ में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था[1] अवलोकित काम में पर्दा प्रथा के प्रभाव के कारण हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों ने स्त्रियों की शिक्षा व्यवस्था के प्रति ध्यान देना बंद कर दिया।[2]

पूर्व मध्यकाल तक बाल विवाह का प्रचलन बढ़ गया था कम उम्र में ही विवाह होने के कारण भी स्त्रियों की शिक्षा दीक्षा पर कुप्रभाव अवश्य पढ़ा होगा। इसके विपरीत कुलीन एवं धनी परिवार की स्त्रियां अपने माता–पिता द्वारा नियुक्त व्यक्तिगत गुरुओं द्वारा शिक्षा प्राप्त करती थीं।[3] गाथासप्तसती जैसे ग्रंथों में अनेक विदुषी एवं कवयित्री स्त्रियों का उल्लेख प्राप्त होता है। **जैसे**–रेखा, रोहा, माधुरी, अनुलक्ष्मी, पाही और राशिप्रभा इत्यादि।[4] छठी–सातवीं शताब्दी में भाषा की दृष्टि से लोकभाषा विलुप्त हो चुकी थी और संस्कृत भाषा का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ रहा था। ऐसी स्थिति में निम्न स्तर पर शिक्षा का ह्रास होना स्वाभाविक था। इस काल में स्त्रियों को शिक्षा के रूप में साहित्य, काव्य–लेखन, कला, अंकगणित, दर्शन, चिकित्सा शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, गृह विज्ञान, ललित कला, शिल्प कला, तथा प्रशासनिक, सैनिक, तंत्र मंत्र की शिक्षाएं जैसे दी जाती थी। दसवीं–ग्यारहवीं शताब्दी में राजशेखर की पत्नी अवन्ति सुन्दरी उत्कृष्ट कवयित्री एवं टीकाकार थीं, साथ ही बाणभट्ट ने राजकुमार चन्द्रीपीड के मनोरंजन में उपस्थित स्त्रियों के काव्य एवं लेखन की निपुणता को भी दर्शाया है।[5] ऐसे अन्य बहुत से उदाहरण प्राप्त होते हैं जिसके अनुसार की उच्च वर्ग की महिलाओं द्वारा शिक्षा ग्रहण करने के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

पूर्व मध्यकालीन साहित्य के अध्ययन से नारी शिक्षा के विषय में पूर्ण जानकारी मिलती है लेकिन उस काल के अभिलेख नारी शिक्षा पर प्रकाश डालने में असमर्थ हैं। अल्बरूनी के लेख से 11वीं शताब्दी की स्त्रियों की स्थिति का ज्ञान होता है। मूर्ति कला के माध्यम से पूर्व मध्यकालीन समाज में नारी की शिक्षा दीक्षा का विवरण प्राप्त होता है। उत्तर भारत में नागरशैली के उत्कृष्ट उदाहरण खजुराहो से नारी शिक्षा सम्बन्धी अंकन बहुतायत में प्राप्त हुए हैं जो स्त्रियों की शिक्षा को प्रस्तुत करते हैं। खजुराहो की कला में एक स्त्री कागज का टुकड़ा लिए हुए एक पुरुष के पास बैठकर कुछ समझ रही है।[6] खजुराहो के अंकन से ऐसा प्रतीत होता है कि शिल्पकारों ने पढ़ती–लिखती हुई स्त्रियों के मनोभावों को बड़ी सजीवता से प्रदर्शित किया है। चंदेल कालीन कंदरिया महादेव मंदिर के दाहिने बाहरी भाग में एक स्त्री पत्र लिए हुए मुस्कुरा रही है। विवेच्य युग में स्त्रियां अध्यापन का कार्य भी करती थीं। स्त्रियों द्वारा किए जाने वाले अध्यापन कार्य का एक उदाहरण कुंज को एक संस्कृत शिलालेख में मिलता है। इस अभिलेख में राजा जयवर्मन सातवें की शिक्षित पत्नी इंद्रावती एक प्राचार्य का कार्य करती थी जो प्रतिदिन राज महल के बौद्ध तथा जैन मंदिरों में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान करती थीं जो प्रतिदिन राजमहल के बौद्ध एवं जैन मंदिरों में स्त्रियों को शिक्षा देती थीं।[7] आठवीं शताब्दी में भवभूतिकृत उत्तररामचरित में सह–शिक्षा का वर्णन भी किया गया है।

* *प्राध्यापक, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर*